Part -3 (Art, Culture & Literature)
Chapter-I
May/Vol.1.0/Issue-I

''संस्कृत पत्रकारिता के सामाजिक सरोकार''

सारांशः संस्कृतही विश्व का वह अनन्य साहित्य है, जिससे मानवता की प्रथम अभिव्यक्ति का परिचय मिलता है। संस्कृत साहित्य के द्वारा सुदूर प्राचीन युग से आज तक के मानव के श्रेष्ठ विचारों की सरिता प्रवाहित हुई है। संस्कृत विश्व की असंख्य भाषाओं को अनुप्राणित करती हुई आज भी उदात्त, लावण्यमयी और रस निर्भर बनी हुई है। विश्व साहित्य में पत्रकारिता एक अभिनव कोटि का साहित्य है। उन्नीसवीं शती के मध्ययुगानन्तर संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास प्रारम्भ होता है। यह किसी प्रदेश विदेश की धरोहर नहीं है। यह कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा कच्छ से कामरूप तक प्रसृत है। इसका आयाम विशाल है और इसमें महनीय रचनाओं का प्रकाशन हुआ है।

संस्कृत पत्रकारिता विविध सामाजिक सरोकारों को लेकर प्रारम्भ हुई। संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं के इन उद्देश्यों को प्रस्तुत करना ही इस शोधपत्र का उद्देश्य है।

ISSN CODE : 2456-1045 (Online)
(ICV-ACL/Impact Value): 2.62
(GIF) Impact Factor : 0.058
Copyright@IJF 2016
Journal Code : ARJMD/ACL/V-1.0/I-1/May-2016
website : www.journalresearchijf.com
Received : 23.02.2016
Accepted: 18.03.2016
Date of Publication : 31.05.2016
Page: 18-20

Name of the Author:
डॉ. डॉली जैन
512, रामानुजन आवास
वनस्थली विद्यापीठ
टोंक (राज.)

संस्कृतही विश्व का वह अनन्य साहित्य है, जिससे मानवता की प्रथम अभिव्यक्ति का परिचय मिलता है। संस्कृत साहित्य के द्वारा सुदूर प्राचीन युग से आज तक के मानव के श्रेष्ठ विचारों की सरिता प्रवाहित हुई है। संस्कृत विश्व की असंख्य भाषाओं को अनुप्राणित करती हुई आज भी उदात्त, लावण्यमयी और रस निर्भर बनी हुई है। विश्व साहित्य में पत्रकारिता एक अभिनव कोटि का साहित्य है। उन्नीसवीं शती के मध्ययुगानन्तर संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास प्रारम्भ होता है। यह किसी प्रदेश विदेश की धरोहर नहीं है। यह कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा कच्छ से कामरूप तक प्रसृत है। इसका आयाम विशाल है और इसमें महनीय रचनाओं का प्रकाशन हुआ है।

संस्कृत भाषा में पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन में पाश्चात्य प्रभाव मूल कारण प्रतीत होता है। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य भाग में साहित्य सर्जना के इस अभिनव पथ को अपनाकर संस्कृतज्ञों ने संस्कृत को आगे बढ़ाने का सफल प्रयास किया।[1] संस्कृत प्रेमियों ने देखा कि अर्वाचीन साहित्य के अभाव में संस्कृत भाषा के प्रति नूतन श्रद्धा संवर्धित नहीं हो रही है। अतएव अनेक उत्साह सम्पन्न पण्डितों ने अनेक बाधाओं के रहने पर भी संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ किया।[1] उपर्युक्त सर्वसम्मत उद्देश्य के अतिरिक्त पत्र–पत्रिकाओं के अन्य विशिष्ट उद्देश्य भी थे, जो इस प्रकार हैं–

1. मृतभाषा की भ्रान्ति समाप्त करना

संस्कृत के विषय में ''मृत भाषात्व'' की भ्रान्ति को दूर करने के लिए अनेक पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। अनेक पाश्चात्य संस्कृत विद्वानों की भी यह धारणा थी कि संस्कृत मृत भाषा नहीं है। **विण्टरनित्स** के अनुसार **"Sanskrit is not a "dead Language" even today. There are still at the persent day a number of Sanskrit periodicals in India. To this very day Poetry is still composed and words written to Sanskrit."**[3]

1. Adyar Library Bulletin X X - 1.2, P. No 25
2. Modern Sanskrit Literature, P. No 207
3. History of Indian Literature, I, P.No 45

मैक्समूलर ने भी इस भ्रान्ति का निवारण करते हुए कहा है कि संस्कृत का प्रचार भारत में सर्वत्र है। कन्याकुमारी से काश्मीर तक, कच्छ से कामरूप तक संस्कृत किसी न किसी रूप में जनसाधारण की भाषा है। यथा **Sanskrit may be said to be still the only language that is spoken over the whole extent of the vast country.**[1]

सूनृतवादिनी, संस्कृतचन्द्रिका, संस्कृतम, संस्कृत साकेत आदि पत्र-पत्रिकाओं का प्रमुख उद्देश्य संस्कृत की सजीवता को प्रस्तुत करना ही प्रतीत होता है। **सूनृतवादिनी** पत्रिका द्वारा संस्कृत की सजीवता को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया- **''ये किल मन्यते मृतैव भगवती संस्कृतभाषेति, अवश्यमवेक्ष्यताममीभिः सूनृतवादिनी साप्ताहिकी संवादपत्रिका, येन जीवत्येवाद्यापि सर्वा◌ीणसौष्ठवशालिनी, संस्कृतभाषेति शक्येतामीभिरवबोद्धुम्।**[2]

संस्कृतचन्द्रिका पत्रिका में भी इसी प्रकार के विचार प्रकाशित हुए। यथा - **प्रलपन्तु नामेदानीं केऽपि कूपमण्डूका निधनं गता भगवती देववाणीति। ये पुनः ब◌ीषु विलसन्तीं दाक्षियात्येषु दीव्यन्तीं नेपालेषु नृत्यन्तीं राजस्थानेषु राजन्तीं महाराष्ट्रेषु माद्यन्तीं गुर्जरेषु गर्जन्तीं काश्मीरेषु कूजन्तीं अन्येषु च तेषु-तेषु प्रदेशेषु विद्वद्वदनारविन्देषु वहरन्तीमभिनवकविगणप्रदत्तकरावलम्बां पुनः प्ररुढयौवनामिव सर्वा◌ीसुन्दरीमेनां पश्यन्ति। कथं नाम ते स्वप्नेऽपि व्याहरेयुः प◌ैचत्वं गता देवसरस्वतीति। कियन्ति वा सम्प्रति मनोरमाणि काव्यानि नोत्पद्यन्ते यानि किल विलोकनमात्रेण प्रत्याययेयुरद्यापि निर्बाधत्वं च ससारत्वं च सरसरमणीयत्वं च संस्कृताया गिरां देव्याः।**[3]

संस्कृत आयोग ने भी अपनी रिपोर्ट में यही कहा है कि संस्कृत का व्यापक प्रसार और प्रचार पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा हो रहा है। यथा - **Not the least item in this endeavour in keeping up sanskrit as a living language is the publication of sanskrit journals from different parts of the country. The Sanskrit journal has played a valuable part in making sanskrit a live medium of expression of contemparary thought and of discussion of current problems, and in infusing new life into that language.**[4]

2. संस्कृत के प्रति श्रद्धा

अनेक पत्रिकाओं का प्रकाशन संस्कृत के प्रति श्रद्धा और आस्था के कारण हुआ। प्रयाग से **शारदा पत्रिका** का प्रकाशन इसी उद्देश्य को लेकर किया गया। यथा- **सम्प्रत्यपि दर्शनेषु शिल्पेषु कलास्वितिहासेषु च प्रबन्धान् प्रणीय शिल्पाद्युपदेशैर्निजप्रातिवेशिकान् कृताथयन्तो यथापुरं भारतीयाः यथाऋणान्यपाकृत्य पूर्वजानां मुखान्युज्ज्वलयेयुरात्मनश्च कल◌ीः क्षालयेयुरित्यभिनवः समारम्भोऽस्माकम्। यथा ज्ञानबुभुक्षानलस्तृप्तिमीयात् तथेयं प्रयतिष्यते।**[5]

इसी प्रकार **भारतवाणी** पत्रिका का प्रारम्भ भी इसी उद्देश्य को लेकर किया गया। यथा- **संस्कृतविषयकेण प्रेम्णा, संस्कृतविषयि चिन्तया च प्रकाशितेयं भारतवाणी। संस्कृतविषयको योऽयं स्नेहातिशयः श्रद्धा आत्मीयता च इदानीं केवल तात्त्विकप्रामाण्यम् अनुभवति तत्सर्व प्रत्यक्षे साकारीकर्तुं कार्ये परिणमयितुं च भारतवाण्याः अवतारः, तदेव च तस्याः जीवितकार्यम्।**[1]

3. वसुधैव कुटुम्बकम्

कुछ पत्रिकाओं का प्रारम्भ ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' या विश्व शान्ति के उद्देश्य से हुआ। **''प्रणवपरिजात''** पत्रिका के प्रकाशन का यही उद्देश्य था- **इतः संस्कृतराष्ट्रभाषासम्मेलनस्याधिवेशनं इतश्च विश्वशान्तिपथान्वेषणं भारतवर्षमधिवसतां केषांचित् कर्णकुहरद्वारं आहन्तीति लक्ष्यद्वयमेव पुरतो निधाय मर्त्यभूमाववतरति प्रणवपारिजातः। विश्वशान्तिमूलभूतप्रेरणेयमस्ति तथा च सुरभारतीसेवा श्रीभगवन्नाममहिमप्रचारश्चेति।**[2]

4. संस्कृत शिक्षण

अनेक पत्र-पत्रिकाओं का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत की शिक्षा देना रहा है। बालकों के लिए सरल संस्कृत भाषा में विभिन्न विषयों पर प्रहेलिका, निबन्ध आदि का प्रकाशन इनमें हुआ है। **बालसंस्कृतम्** पत्रिका का यही उद्देश्य था। यथा - **पत्रेऽस्मिन् प्रकाशितसाहित्यं सर्वेभ्यः रोचते, विशेषेण विद्यालयीयेभ्यश्छात्रेभ्यः। संस्कृतं नाम मुखं द्वारं वा भारतीयानां विज्ञानानां मन्दिरस्य। यावद् भारतीयाश्छात्रा संस्कृतं न पठेयुस्तावद् भारतीयविज्ञानस्य द्वारं वर्तते तेषां कृते पिहितम्। अतएव बालकानां प्राथमिकज्ञानमपेक्षते। तेषां कृत एव बालसंस्कृतस्य प्रकाशनं प्रामुख्येण क्रियते। तथापि -**

बाले वृद्धे नवे यूनि कुट्यां ग्रामे गृहे पुरे।
संस्कृतस्य प्रचाराय प्रभूयाद्बालसंस्कृतम्।।[3]

इसी प्रकार **सहस्रांशु** पत्रिका का उद्देश्य था **- पत्रेऽस्मिन् बालकानां विनोदाय ज्ञानाय च या च सामग्री यानि च चित्राणि प्रकाश्यन्ते, ये च केचन विचित्राः समाचाराः प्रकाश्यन्ते ते प्रायः बालकानां कृत एव।**[4]

5. धर्म का प्रचार करना

धार्मिक विषयों के ज्ञान के लिए, धर्म के अभ्युदय के लिए अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। **ब्राह्मणमहासम्मेलन** नामक पत्र के द्वारा सनातन धर्म की प्रतिष्ठा का प्रयत्न किया गया। यथा- **घोरेऽस्मिन् धर्मविप्लवसमये विशुद्धसनातनधर्मप्रचाराय प्रयतमानं ब्राह्मणमहासम्मेलननामकं पत्रमस्ति।**[5]

---

[1] India what can it teach us. P.NO 71
[2] सूनृतवादिनी - 1.1
[3] संस्कृतचन्द्रिका- 9.1-3
[4] Report of the sanskrit commission, 1955-57, P.No. 219-220
[5] शारदा- 1.1

1 भारतवाणी - 1.1
2 प्रणवपारिजात - 1.1
3 बालसंस्कृतम् - 1.1
4 सहस्रांशु - 1.1
5 ब्राह्मणमहासम्मेलनम् - 1.1

वाराणसी से प्रकाशित **साप्ताहिक पण्डित** पत्रिका का उद्देश्य था – **रागलोभभयादिति निमित्तोपस्थावपि सत्यभूतस्य सिद्धान्तस्य प्रकाशनम्, तथा प्राणिनामभ्युदयः निःश्रेयस् मूलभूतस्य श्रोतस्मार्तलक्षणस्य धर्मप्रतिष्ठापनम्, प्रचारणम् तथाचरतः सहयोगप्रदानमस्या उद्देश्यमिति।**[1]

6. दर्शन प्रचार

दार्शनिक पत्र–पत्रिकाओं का उद्देश्य सरल भाषा में दार्शनिक विषयों व सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना है। **पीयूष** पत्रिका का प्रयोजन था **– पुष्टिपथस्य पारमार्थिक तत्त्वं जिज्ञासूनां कृते पत्रिकेयं सविशेषमादरमर्हति।**

7. साहित्यसर्जना

प्राचीन और नवीन संस्कृत ग्रन्थों को प्रकाशित करने के लिए अनेक पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। संस्कृत भारती, सूर्योदय, संस्कृत पद्यवाणी, संस्कृत गद्यवाणी, श्रीशंकरगुरुकुलम्, संस्कृतसाहित्यपरिषत्पत्रिका, उद्योत, सहृदया आदि प्रधान हैं। **संस्कृतचन्द्रिका** में अम्बिकादत्त व्यास द्वारा रचित शिवराजविजयः का सर्वप्रथम प्रकाशन हुआ। **संस्कृत पद्यवाणी** में पद्य ग्रन्थों का प्रकाशन होता था। यथा– **अतः सप्रयोजनात्र तादृशी कापि पत्रिका गीर्वाणवाणी प्रतीका या निरन्तरायं प्राधान्येन पद्योन्नतिपरायणा पद्यप्रचुरा च नितरामलंकृत्यमार्ये स्वशक्तिं विनियोजयितुमिति। सम्प्रति पुनस्तस्या एव लक्ष्यभूतां समभिलक्ष्य प्राचीनतम संस्कृतसाहित्यविभूतिसम्बलमत्त्वा अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्यग्रन्थानां प्रकाशनं पत्रिकायामस्यां भविष्यति।**[2]

सूक्तिसूधा पत्रिका में अनेक ग्रन्थों का निरन्तर प्रकाशन हुआ है। यथा – **एतस्या न्यूनतायाः प्रमार्जनाय सुकरेषूपायेषु सूक्तिसुधा नाम्नी पत्रिका प्रतिमासं प्रकाशयिष्यते। अस्यां चाभिनवाः काव्यनाटकचम्पूप्रभृतयः केचनग्रन्थाः पुरातनाश्च केचित्साहित्यग्रन्थाः सटिप्पणीकाः काचित्समस्यापूर्तयः ग्रन्थाः प्रकाश्यन्ते।**[3]

8. संस्कृत का प्रचार

जनसाधारण तक संस्कृत भाषा का प्रचार हो– इस कारण भी अनेक पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ है। भारतवाणी, भारती, संस्कृतप्रचारकम्, साप्ताहिक भवितव्यम् का उद्देश्य यही था। **भारतवाणी** का उद्देश्य संस्कृत का प्रचार करना था। यथा – **यतश्च संस्कृतस्य काठिन्यप्रवादेन पराङ्मुखीभूतायाः जनतायाः संस्कृताभिमुखीकरणमस्माकं उद्देश्यः।**[4]

भारती का उद्देश्य था – **संस्कृतभाषायाः प्रचारः सरलेन संस्कृतेन सर्वत्र भवतु इत्यस्य पत्रस्योद्देश्यम्।**[5]

साप्ताहिक भवितव्यं का उद्देश्य था – **भवितव्यं नाम साप्ताहिकं पत्रं संस्कृतभाषाप्रचारार्थं प्रकाश्यते।**[1] **संस्कृतं** साप्ताहिक पत्र का उद्देश्य था – **संस्कृभाषाप्रचारार्थाय पत्रमिदं साकेततः प्रकाशयिष्यते साप्ताहिकरूपेण।**[2] **दिव्यज्योति :** पत्रिका का उद्देश्य है – **सरलैः सरसैः सुबोधैः सर्वस्मिन् संसारे संस्कृतस्य प्रचारः, साहित्यान्तर्गतानां सकलानां कलानां समन्वेषणं, संसारस्य हितसम्पादनम् एवं लौकिकालौकिकस्वातनयिंस्य प्राप्तिः, पत्रस्य इमामि उद्देश्यानि वर्तन्ते।**[3]

9. समस्यापूर्ति

संस्कृतकाव्यकादम्बिनी, विद्वत्कला और समस्यापूर्तिः आदि पत्रिकाओं का उद्देश्य समस्याओं को प्रकाशित करना था। इन पत्रिकाओं के मूल में नये लेखकों को प्रोत्साहित करना था।

10. विज्ञान

आधुनिक विज्ञानपरक विषयों को संस्कृत भाषा में प्रकाशित करना कतिपय पत्रिकाओं का उद्देश्य था। **मनोरमा** पत्रिका का उद्देश्य यही था। यथा – **नवीनां वैज्ञानिकाविर्भावानां समयमनुवर्तमानानां च विषयाणां सरलसरसया रसबन्धुरया च वाण्या प्रकाशनं मनोरमायाश्चरमाभिसन्धिः।**[4]

11. अनुसन्धान

संस्कृत भाषा में होने वाले विविध अनुसन्धानों को प्रकाशित करना विविध पत्रिकाओं का उद्देश्य था। **सरस्वतीभवनानुशीलनम्** पत्रिका का यही उद्देश्य था। यथा – **अनुसन्धानमूलकनिबन्धानां प्रकाशनार्थं सरस्वतीभवनानुशीलनपत्रिकायाः प्रकाशनमभवत्।**[5]

सागरिका शोध प्रधान पत्रिका है। उसका उद्देश्य है– **नान्या काचिद्भाषा तादृशं सामर्थ्यं लब्धुं क्षमा इत्येतत् सन्धार्य भारतेऽभिनवोन्मेषशालिनी संस्कृतभारती सततमभिनवाभिः कृतिभिः परिपोष्यमाणा सती भारतीयसंस्कृतिं पुष्णातु इत्यस्माकं संकल्पः। अस्यां पत्रिकायां युगानुरूपं किंचिदभिनवं साहित्यं संवर्धयितुं प्रधानप्रवृत्तिरस्माकम्।**[6]

12. संस्कृतिविमर्श

भारतीय संस्कृति के विशाल स्वरूप को प्रस्तुत करने के लिए अनेक पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। **भारतसुधा** पत्रिका का उद्देश्य था – **महाजनो येन गतः पथा इति न्यायेन वयं भारतसंस्कृतिकल्पद्रुमस्य धर्मशास्त्रकलाप्रभृतिशाखानां 4**

इस प्रकार संस्कृत पत्रकारिता अनेक उद्देश्यों को लेकर प्रारम्भ हुई। प्रस्तुत शोधपत्र का निष्कर्ष निम्न बिन्दुओं में देखा जा सकता है –

1. संस्कृत संजीवन, संस्कृत का प्रचार–प्रसार करना व संस्कृत शिक्षण इन पत्रिकाओं का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य था। भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन को प्रस्तुत करना पत्रिकाओं का द्वितीय प्रधान उद्देश्य था।
2. संस्कृत पत्रकारिता केवल अपने देश के हित तक ही सीमित नहीं रही अपितु विश्वशान्ति की कामना भी उसमें निहित थी जो भारतीयों की वैश्विक दृष्टि व ''यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्'' की भावना को साकार करती है।

---

1 पण्डितपत्रिका – 1.1
2 संस्कृतपद्यवाणी – 1.1
3 सूक्तिसुधा – 1.1
4 भारतवाणी – 1.1
5 भारती 1.1

---

1 संस्कृतभवितव्यम् – 1.1
2 संस्कृतम् – 1.1
3 दिव्यज्योतिः – 1.1
4 मनोरमा – 1.1
5 सरस्वतीभवनानुशीलनम् – 1.1
6 सागरिका – 1.1, पृ. सं. 93